प्रकाशकीय निवेदन

धवला षट्खंडागम सिद्धान्त ग्रंथके पंचम खंडके १३ वे पुस्तक स्पर्श-कर्म-प्रकृतिअनुयोगद्वार तृतीय आवृत्तिका प्रकाशन करनेमें हम बडे संतोषका अनुभव कर रहे है। इस ग्रंथकी द्वितीय आवृत्तिके पुनर्मुद्रणके लिए धर्मानुरागी धवला परमसंरक्षक **श्री. डॉ. अप्पासाहेब कलगोंडा नाडगौडा पाटील.** रबकवी और उनकी धर्मपत्नी **सौ. डॉ. त्रिशलादेवी नाडगौडा पाटील** इन्होंने सहयोग दिया था । और इस तृतीय आवृत्तिके लिए **ब्र. पं. हेमचंद जैन**, भोपाल इन्होंने इस ग्रंथके लिए आर्थिक सहयोग दिया है । इन दोनो महानुभावोंके सहयोगसे यह प्रकाशन उपलब्ध हो रहा है । इसलिए इन दोनों दातारोंका हार्दिक अभिनंदन करते हुए हम उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं ।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधनकार्य श्री. धन्यकुमार जैनी तथा डॉ. कमलकुमार जैन द्वारा संपन्न हुआ है । टाइपसेटिंग जीवराज ग्राफिक्स, सोलापुर इनके द्वारा संपन्न हुआ है । इनके सहयोगके लिए हम आभार प्रकट करते हैं ।

धवला षट्खंडागम पुस्तक १४ से १६ का प्रकाशनकार्य चल रहा है । जल्दही उसकाभी प्रकाशन हो जाएगा ।

- रतनचंद सखाराम शहा

मंत्री